पद २८८ (राग: देस - ताल: त्रिताल) म्हणुनी जग नाहीं जग नाहीं। जग हे ब्रह्मचि पाहीं।।ध्रु.।। स्फूर्तिरूप

वाचेविण अनिर्वाच्य कैचें।।२।।

तेचि माया। मायाविण ब्रह्म वाया।।१।। माणिक म्हणे अनिर्वाच्य।